कृषि विभाग– पौधा संरक्षण
पौधा संरक्षण सामयिक सूचना

अंक–02/2015–16

ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई एवं खरीफ फसलों के लिए खेत की तैयारी :–

खरीफ फसलों की खेती में ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई काफी महत्वपूर्ण है। अतः ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई कर बिना पाटा दिए खेत को छोड़ दें। इससे खेत में उगे खर–पतवार उखड़ कर सूख जाते हैं। मिट्टी में छुपे कीटों की विभिन्न अवस्थाएँ खुले में आने पर चिड़ियों द्वारा चुग लिया जाता है तथा रोग के कारक (Factor) फफूँद, जीवाणु आदि कड़ी धूप के कारण नष्ट हो जाते हैं। खेत की गहरी जुताई होने के कारण खेत में बना चूहों का बिल (आवास) नष्ट हो जाता है, जिससे चूहों का प्रकोप भी कम हो जाता है। इसलिए कृषक खेत की गहरी जुताई कर खरपात प्रबंधन का भी लाभ उठा सकते है। साथ ही कीट/व्याधियों का द्वितीयक आवास (Host) से भी छुटकारा मिल सकता है।

कृषक इस समय खरीफ से संबंधित अपनी तैयारियों में निम्नांकित विन्दुओं पर अवश्य ध्यान देगें:–

1. अच्छे उत्पादन के लिए खेत के अनुसार फसल का चुनाव करें ताकि उत्पादन सुनिश्चित हो सकें।

2. खेत की ऊँची, नीची और मध्यम स्थिति के अनुसार उस क्षेत्र में लगने वाले कीट/व्याधियों के मद्देनजर धान के उन्नत एवं प्रतिरोधी प्रभेदों का चयन करें। जैसा कि आप जानते हैं, कि ऊँची जमीन के लिए कम दिनों में तैयार होने वाले प्रभेद, नीची जमीन के लिए लम्बी अवधि वाले प्रभेद तथा मध्यम जमीन के लिए मध्यम अवधि में तैयार होने वाले प्रभेदों का चयन किया जाता है। बहुत से कीट/व्याधियों के प्रतिरोधी एवं सहिष्णु प्रभेद बाजार में उपलब्ध हैं। जिन पर उनका असर बहुत कम होता है। इसलिए कृषक बंधु वैसे प्रभेदों का चुनाव करें जो आपके क्षेत्र में लगने वाले कीट/व्याधियों के प्रतिरोधी या सहिष्णु हों।

3. बीज स्वच्छ, स्वस्थ एवं पुष्ट होना चाहिए जिसमें खरपात के बीज मिले हुए न हों, बीज को फटककर साफ सुथरा एवं खरपात के बीज से मुक्त कर लेना आवश्यक है। बीज की अंकुरण क्षमता 80% से कम नहीं होनी चाहिए। इसकी जॉच के लिए सौ (100) बीज को अंकुरण के लिए गमला या मिट्टी में डाल देना चाहिए। जितने पौधे उग जाती है वहीं बीज की अंकुरण क्षमता होती है। इसलिए किसान पुष्ट बीज का ही प्रयोग करें। पुष्ट बीज प्राप्त करने के लिए साधारण नमक के 10% घोल में बीज को डुबाऐं, तैर रहे हल्के बीज को अलग कर दें। और डूबे बीज को दो–तीन बार साफ पानी से धोकर छाया में सूखा कर ही बुआई करनी चाहिए।

4. पौधशाला का चुनाव छाया वाले जगह या नीची जमीन में नहीं करना चाहिए। जहॉ पानी लगता हो एवं छाया वाले जगह के बिचड़े पतले लम्बे हो जाते हैं, तथा उनकी पत्तियॉ भी पतली, लम्बी, नीचे के तरफ झुकी होती है। रोपनी के समय पत्तियॉ कादों में सटकर संक्रमित हो जाती है। पौधे कमजोर होने के कारण बाली निकलने के समय गिर जाते हैं। जिसका कुप्रभाव उत्पादन पर पड़ता है।

5. पौधशाला में भरपूर कम्पोस्ट दिया जाना चाहिए ताकि बिचड़ा उखाड़ते समय उनका जड़ नहीं टूटें। कटे– फटे भाग से रोगाणुओं को पौधों में प्रवेश की जगह मिलती है। श्री विधि से धान लगाने हेतु 25 X 25 से0 मी0 की दूरी पर 8–12 दिन के एक–एक बिचड़े को लगाना चाहिए।

6. जिन खेतों में मूंग की खेती की गयी हो एवं मूॅग का एक या दो बार फली की तुड़ाई की जा चुकी हो, खेत में बिचड़ा लगाने के 10–15 दिन पूर्व ही मूॅग की जुताई कर मिट्टी में पलट दें, ताकि मूंग खेत में सड़ कर खाद के रूप में धान के लिए काम कर सकें।

7. जिन खेतों में ढैंचा लगाया गया हो तो इसे भी बुआई के 40–50 दिनों के भीतर खेत में पलट देना चाहिए एवं इन खेतों में 10–15 दिनों के बाद धान की फसल लगानी चाहिए, ताकि ढैंचा खेत में ही सड़ कर धान के लिए खाद का काम कर सकें।

बीज उपचार :–

1. कीट/व्याधि से मुक्त फसल के बीज को स्वस्थ बीज माना जाता है, किन्तु व्यवहार में यह सम्भव नहीं हैं। इसलिए किसी भी बीज को मिट्टी में गिराने से पहले अनुसंशित बीजशोधक से बीजोपचार करने की सलाह दी जाती है। सीधी बुआई वाले प्रति किलोग्राम धान के बीज को कार्बेन्डाजिम 50% WP 20 ग्राम एवं स्ट्रेप्टोसायक्लिन 1 ग्राम प्रति 10 ली0 पानी की दर से बने घोल में छः घंटे डुबोना चाहिए। कादो किए गए पौधशाला के लिए शोधक के घोल में बीज को 12 घंटे रखना चाहिए। फिर उसे 24 घंटे छाया में भींगे बोरे से ढ़ककर रखना चाहिए, ताकि बीज अंकुरित हो जाए। तब उसे पौधशाला में बिखेर देना चाहिए। जिन क्षेत्रों में धान फसल पर जीवाणु जनित रोग बी0 एल0 बी0 का प्रकोप प्रायः हो जाता है, उन क्षेत्रों में जून माह के अन्त तक रोपनी अवश्य ही कर लेना श्रेयष्कर होगा।

2. मक्का, अरहर, मूंग, उरद के बीज का उपचार प्रति किलोंग्राम बीज में 2 ग्राम थिरम 75% WP या कार्बेन्डाजिम 50%WP तथा 6 मि0 ली0 क्लोरपायरीफॉस 20% ई0 सी0 मिलाकर करना चाहिए। मूंग में क्लोरपायरीफॉस का व्यवहार न करें। सिर्फ फफूँदनाशी से बीज उपचार करें। सभी दलहनी फसलों में प्रति हेक्टेयर के लिए आवश्यक बीज की मात्रा में 500–600 ग्राम राइजोबियम कल्चर अवश्य मिलाना चाहिए।

विशेष जानकारी, सेवा एवं सुविधा के लिए अपने नजदीक के पौधा संरक्षण केन्द्र, सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण, जिला कृषि कार्यालय अथवा कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक से सम्पर्क करें।

ह0/–
संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण,
बिहार, पटना।

ज्ञाप संख्या– 19–4/पौ0सं0सर्वे0/15–16– /कृ0,पटना, दिनांक– मई, 2015 ।

प्रतिलिपिः– केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी (सभी)/केन्द्र निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, पटना की सेवा में प्रेषित करते हुए आग्रह है कि कृपया जनहित में उपर्युक्त सूचनाओं को कृषि कार्यक्रमों में प्रसारित करने की कृपा की जाय।

प्रतिलिपिः– सहायक निदेशक, पौधा संरक्षण (सभी)/किसान कॉल सेन्टर, पटना/जिला कृषि पदाधिकारी (सभी)/ उप निदेशक, पौ0 सं0, (सभी)/उप कृषि निदेशक, सूचना, बिहार, पटना/ संयुक्त निदेशक (शष्य) सभी की सेवा में सूचनार्थ प्रेषित। आपसे आग्रह है कि किसानों के हित में उक्त सूचनाओं को प्रचारित–प्रसारित करने की कृपा की जाय।

प्रतिलिपिः– प्राचार्य, प्रसार प्रशिक्षण केन्द्र, मुशहरी, मुजफ्फरपुर, पटना, भोजपुर एंव पूर्णियाँ/वरीय वैज्ञानिक कीट/रोग, कृषि अनुसंधान संस्थान, राजेन्द्र कृषि विश्वविधालय, मीठापुर पटना/कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द्र (सभी)/निदेशक, प्रसार शिक्षा रा0 कृ0 वि0 वि0, पूसा समस्तीपुर/ बिहार कृषि विश्वविधालय, सबौर, भागलपुर की सेवा में समर्पित करते हुए अनुरोध है कि अपने अनुभवों के आधार पर अपना बहुमूल्य सुझाव देने की कृपा करेंगे।

प्रतिलिपिः– पौधा संरक्षण सलाहकार, भारत सरकार/निदेशक, आई0 पी0 एम0, भारत सरकार, पौधा संरक्षण संगरोध एवं संचयन निदेशालय, एन0 एच0–4 फरीदाबाद (हरियाणा) की सेवा में सादर सूचनार्थ समर्पित।

प्रतिलिपिः– कृषि निदेशक, बिहार, पटना/ प्रधान सचिव, कृषि विभाग, बिहार, पटना/कृषि उत्पादन आयुक्त, बिहार, पटना/विकास आयुक्त, बिहार, पटना की सेवा में सादर सूचनार्थ समर्पित।

संयुक्त निदेशक, पौधा संरक्षण
बिहार, पटना।

जैविक अपनायें, स्वच्छ उपजायें।
स्वच्छ खायें, स्वस्थ रहें ।।